English	HYBRID CHILLI (BLEL - 111)	ગુજરાતી	ગુજરાતી વિગતે (વિગતે - 111)	મરાઠી	મરાઠી વિગતે (વિગતે - 111)	ઉર્દૂ	ઉર્દૂ વિગતે (વિગતે - 111)	ગઢવાલી/કુમાઉંની	ગઢવાલી/કુમાઉંની વિગતે (વિગતે - 111)	બંગાળી	બંગાળી વિગતે (વિગતે - 111)	તેલુગુ	તેલુગુ વિગતે (વિગતે - 111)
Field Sanitation	Remove residues of previous crops, weeds, old vines and diseased/damaged plant material before sowing. Keep the boundaries of field clean to reduce pest and disease carry-over.	ખેત પ્રસ્વચ્છતા	જુવાર કે બાજરી જેવાં પાકનાં અવશેષ, ઝાડવાં, જૂનાં વેલા કાઢી નાખવાં અને રોગગ્રસ્ત/કોહોલાં છોડ વાવ કરે એટલે કીટ અને રોગ ફેલાતાં અટકે. ખેતર ફરતે સ્વચ્છ રાખો.	फील्ड स्वच्छता	पेरणी करण्यापूर्वी मागील पिकाचे अवशेष, जुनाट वेली आणि रोगग्रस्त/कोहोलेल्या वनस्पती काढून टाका. शेत बांध स्वच्छ ठेवा.	فیلڈ صفائی	پیداوار شروع ہونے سے پہلے پرانی فصل کی باقیات، جھاڑیاں اور بیمار/خراب پودے ہٹا دیں۔ کیڑوں اور بیماریوں کی منتقلی کم کرنے کے لئے کھیت کی حدود صاف رکھیں۔	फसल स्वच्छता	पिछले फसल के अवशेष, खरपतवार, पुराने बेल और रोगग्रस्त/मुरझाए पौधों को बुवाई से पहले हटा दें। खेत की सीमाएं साफ रखें।
Soil requirement	Sandy loam to loam soil, well-drained, fertile, with good organic matter. Ideal pH range: around 6.0-7.0. Avoid waterlogging, as Chilli is sensitive to excess moisture.	માટી જોઈએ તે પ્રમાણે	બધી જાતિના જ કોઈ ચિલ્લી, સારી રાત નિકાલી લાગી, ઉપરાંત સેન્દ્રિય તત્વ ધરાવતી રેતાળ કે ગોરાટ જમીન સારી. આદર્શ pH-શ્રેણી: આશરે 6.0-7.0. ચિલ્લી ભરાવાનું નહીં, કારણ કે વધારે પાણી કીટ પ્રત્યે સંવેદનશીલ છે.	चिलीसाठी योग्य जमीन	रेतमिश्र दोमट किंवा चिकण, सेंद्रिय पदार्थयुक्त, चांगल्या निचऱ्याची जमीन. pH श्रेणी: साधारण 6.0-7.0. पाणी साचलेलं नको, कारण मिरची जास्त ओलाव्याला संवेदनशील आहे.	مٹی کی ضرورت	ریتلی دوماٹ، زرخیز، اچھی نکاسی والی، نامیاتی مادے سے بھرپور۔ مثالی pH رینج: تقریباً 6.0-7.0۔ پانی جمع نہ ہونے دیں، مرچ زیادہ نمی کے لئے حساس ہوتی ہے۔	माटी गैढ़वाल	बलुई दोमट से दोमट, अच्छी जल निकासी वाली, उपजाऊ। आदर्श pH सीमा: लगभग 6.0-7.0। जलभराव से बचें, क्योंकि मिर्च अधिक नमी के प्रति संवेदनशील होती है।
Soil Testing	Conduct soil testing at least once every 2-3 years for EC, pH, OC, and macro-micro nutrients, and apply fertilizers based on test results.	માટી પરીક્ષણ	મિર્ચી જેવી જ્યારે, જોઈએ તેટલું સુરક્ષા પરિબળ કરવાં જોઈએ કારણ કે ઓછા વધારે 2-3 વર્ષ એક વાર માટી પરીક્ષણ કરીને પરિણામ પ્રમાણે ખાતર નાખવું.	माती परीक्षण	EC, pH, OC आणि मॅक्रो-मायक्रो पोषक तत्वांसाठी माती चाचणी किमान दर 2-3 वर्षांनी एकदा करा आणि परीक्षण निष्कर्षांवर आधारित खते वापरा.	مٹی جانچ	EC، pH، OC اور میکرو-مائیکرو غذائیت کے لئے ہر 2-3 سال میں کم از کم ایک بار مٹی کی جانچ کریں اور ٹیسٹ نتائج کی بنیاد پر کھاد ڈالیں۔	माटी परीक्षण	EC, pH, OC और मैक्रो-माइक्रो पोषक तत्वों के लिए हर 2-3 साल में कम से कम एक बार मिट्टी परीक्षण करें और परीक्षण परिणामों के आधार पर उर्वरक डालें।
Climate Suitability	Climate Requirement Warm-season crop. Optimum temperature: 25-30 °C. Does not tolerate frost or high humidity. Annual rainfall: 625-1500 mm is ideal if well-distributed.	આબોહવા જરૂરિયાત	આબોહવાની જરૂરિયાત ગરમ ઋતુનો પાક. શ્રેષ્ઠ તાપમાન: 25-30 °C. હિમ કે ઠંડા સ્થિર સહન કરતું નથી. વાર્ષિક વરસાદ: 625-1500 મિમી, જો સારી રીતે વિતરિત થતા હોય તો તે આદર્શ છે.	हवामानाची आवश्यकता उष्ण हंगामातील पीक. आदर्श तापमान: 25-30 °C. दंव किंवा उच्च आर्द्रता सहन करत नाही. वार्षिक पाऊसमान: जर चांगल्या पद्धतीने वितरीत झाला तर 625-1500 मिमी आदर्श आहे.	موسمی ضرورت گرم موسم کی فصل۔ مثالی درجہ حرارت: 25-30 °C۔ یہ پالے یا زیادہ نمی برداشت نہیں کرتی۔ سالانہ بارش: 625-1500 ملی میٹر اچھی ہے اگر اچھی طرح تقسیم ہو۔	जलवायु आवश्यकता गर्म मौसम की फसल। इष्टतम तापमान: 25-30 °C। यह पाला या उच्च आर्द्रता सहन नहीं करता। वार्षिक वर्षा: 625-1500 मि.मी. अच्छी मानी जाती है यदि वितरण अच्छा हो।	গরমের প্রয়োজন গরম মৌসুমের ফসল। সর্বোত্তম তাপমাত্রা: 25-30°C। হিমায়ন বা অতিরিক্ত আর্দ্রতা সহ্য করে না। বার্ষিক বৃষ্টিপাত: 625-1500 মি.মি. ভালো যদি সুষম বণ্টন হয়।	వాతావరణ అవసరం వెచ్చని సీజన్ పంట. సరైన ఉష్ణోగ్రత: 25-30°C. మంచు లేదా అధిక తేమను తట్టుకోలేదు. వార్షిక వర్షపాతం: 625-1500 మి.మీ. బాగా పంపిణీ చేస్తే అనువైనది.
Land preparation	Land Preparation 2-3 deep ploughings followed by harrowing to make fine tilth. Add 20-25 t/ha FYM (farmyard manure) before last ploughing. Raised beds or ridges recommended in heavy soil areas for proper drainage.	જમીન તૈયારી	જમીન તૈયારી 2-3 ઊંડા ખેડાણ કર્યા બાદ તેમાં વિઝાણ કરવું જરૂરી કરવું. છેલ્લી ખેડાણ પહેલાં 20-25 ટન/હેક્ટર ખોરાકખેત (FYM) નાખો. ભારે જમીનમાં નિકાલ માટે ઉભા ક્યારા અથવા ચરાડાં ભલામણ કરેલ છે.	जमीन तयारी 2-3 खोल नांगरणी करून त्यानंतर कुळवणी करावी जमीन भुसभुशीत करा. शेवटच्या नांगरणीपूर्वी 20-25 टन/हेक्टर शेणखत (FYM) मिसळा. जड जमीनीत निचऱ्यासाठी उंचवट्यावर लागवड करणे चांगले आहे.	زمین کی تیاری 2-3 گہری جوتائی اور ہموار کرنے کے لئے ہیرو۔ آخری جوتائی سے پہلے 20-25 ٹن/ہیکٹر گوبر کی کھاد ڈالیں۔ بھاری زمین میں اچھی نکاسی کے لئے اونچی کیاریاں یا مینڈھ بنانا مناسب ہے۔	जमीन तैयारी 2-3 गहरी जुताई करें। अंतिम जुताई से पहले 20-25 टन/हेक्टर गोबर खाद (FYM) मिलाएं। भारी मिट्टी में उचित जल निकासी के लिए उठी क्यारियाँ या मेड़ें बनाएँ।	زمین کی تیاری 2-3 گہری جوتائی کریں اور ہموار کریں۔ آخری جوتائی سے پہلے 20-25 ٹن/ہیکٹر گوبر کی کھاد ڈالیں۔ بھاری زمین میں اچھی نکاسی کے لئے اونچی کیاریاں یا مینڈھ بنانا مناسب ہے۔	जमीन तैयार करना 2-3 गहरी जुताई करें और जमीन को भुरभुरी बनाएँ। अंतिम जुताई से पहले 20-25 टन/हेक्टर गोबर खाद (FYM) डालें। भारी मिट्टी में उचित जल निकासी के लिए उठी क्यारियाँ या मेड़ें बनाएँ।
Sowing Time	Sowing Time / Season Nursery sowing: Transplant sowing in January-February (for summer crop) and June-July (for Kharif). • South India: Throughout the year depending on irrigation. Transplanting after 30-40 days when seedlings are 12-15 cm tall. (Source: Kerala Agriculture Dept.& Vikaspedia)	વાવણી સમય	વાવણીનો સમય / ઋતુ • ઉત્તર ભારત: નર્સરી વાવણી ઓક્ટોબર-ડિસેમ્બરી (ઉનાળાના પાક માટે) અને જૂન-જુલાઈ (ખરીફ પાક માટે) માટે. • દક્ષિણ ભારત: સિંચાઈ પર આધાર રાખીને સમગ્ર વર્ષ દરમિયાન. • રોપાઓ 30-40 દિવસ પછી જ્યારે 12-15 સેમી ઊંચાઈ ધરાવતા હોય ત્યારે રોપણી કરો.	पेरणीची वेळ / ऋतू • उत्तर भारत: नर्सरी पेरणी ऑक्टोबर-डिसेंबरमध्ये (उन्हाळी पिकासाठी) आणि जून-जुलैमध्ये (खरीप हंगामासाठी) रोपवाटिका मध्ये. • दक्षिण भारत: सिंचनाच्या उपलब्धतेवर अवलंबून वर्षभर पेरणी. ३०-४० दिवसांनंतर, जेव्हा रोपे १२-१५ सेमी उंच होतील, तेव्हा पुनर्लागवड करावी.	بوائی کا وقت / موسم • شمالی ہند: نرسری بوائی اکتوبر-دسمبر میں (گرمیوں کی فصل کے لئے) اور جون-جولائی (خریف فصل کے لئے)۔ • جنوبی ہند: آبپاشی پر منحصر، سال بھر۔ پودے 30-40 دن بعد جب 12-15 سینٹی میٹر اونچے ہوں تو منتقل کریں۔	बुवाई का समय • उत्तर भारत: नर्सरी बुवाई अक्टूबर-दिसंबर (गर्मी फसल के लिए) और जून-जुलाई (खरीफ फसल के लिए)। • दक्षिण भारत: सिंचाई पर निर्भर, पूरे वर्ष। पौधे 30-40 दिन बाद रोपें जब वे 12-15 सेमी ऊँचे हों।	বপনের সময় নার্সারি বপন: অক্টোবর-ডিসেম্বর (গ্রীষ্মকালীন ফসলের জন্য) এবং জুন-জুলাই (খরিফ মৌসুমের জন্য)। • দক্ষিণ ভারত: সেচের উপর নির্ভর করে সারা বছর। চারাগুলি 30-40 দিন পর রোপণ করুন যখন সেগুলি 12-15 সেমি উচ্চতায় পৌঁছায়।
Seed rate & Spacing	Seed Rate / Sowing Method / Spacing Seed rate: 400 grams (open-pollinated) or 100 grams (hybrid). Sowing: Raise nursery beds (1 m width, 15 cm height), cover with shade net, irrigate lightly until germination. Spacing: 60 - 45 cm (in irrigated crops), 75 - 60 cm in rainfed conditions. (Source: Kerala Agriculture Dept.)	બીજ દર / વાવણી પદ્ધતિ / અંતર	બીજ દર / વાવણી પદ્ધતિ / અંતર બીજ દર: 400 ગ્રામ(ખુલ્લા પરાગરજ) અથવા 100 ગ્રામ(સંકર જાત). વાવણી: નર્સરી પથારી (1 મીટર પહોળાઈ, ૧૫ સે.મી. ઊંચાઈ) કરો, સારાવાર શેડનેટથી ઢાંકી દો, અંકુરણ સુધી હળવી સિંચાઈ કરો. અંતર: સિંચાઈવાળા પાક માટે ૬૦ x ૪૫ સે.મી.; વરસાદી પરિસ્થિતિમાં ૭૫ x ૬૦ સે.મી.	بیج کی شرح / بوائی کا طریقہ / فاصلہ بیج کی شرح: 400 گرام (کھلا پرگن) یا 100 گرام (ہائبرڈ)۔ بوائی: نرسری بیڈ (1 میٹر چوڑائی، 15 سینٹی میٹر اونچائی) بنائیں، شیڈ نیٹ سے ڈھانپیں، اور ہلکی آبپاشی کریں۔ فاصلہ: 60 - 45 سینٹی میٹر (آبپاشی والی فصلوں میں)، 75 - 60 سینٹی میٹر (بارش پر انحصار کرنے والی فصلوں میں)۔	बीज दर / बुवाई की विधि / दूरी बीज दर: 400 ग्राम (खुला परागण) या 100 ग्राम (संकर)। बुवाई: नर्सरी बेड (1 मीटर चौड़ा, 15 सेमी ऊँचा) बनाएँ, छाया जाल से ढकें, अंकुरण तक हल्की सिंचाई करें। दूरी: 60 - 45 सेमी (सिंचित फसलों में), 75 - 60 सेमी (वर्षा आधारित)।	بیج کی شرح / بوائی کا طریقہ / فاصلہ بیج کی شرح: 400 گرام (کھلا پرگن) یا 100 گرام (ہائبرڈ)۔ بوائی: نرسری بیڈ (1 میٹر چوڑائی، 15 سینٹی میٹر اونچائی) بنائیں، شیڈ نیٹ سے ڈھانپیں، اور ہلکی آبپاشی کریں۔ فاصلہ: 60 - 45 سینٹی میٹر (آبپاشی والی فصلوں میں)، 75 - 60 سینٹی میٹر (بارش پر انحصار کرنے والی فصلوں میں)۔	বীজ হার / বপন পদ্ধতি / ব্যবধান বীজ হার: 400 গ্রাম (উন্মুক্ত পরাগায়ন) বা 100 গ্রাম (সঙ্কর)। বপন: নার্সারি বেড (১ মিটার প্রস্থ, ১৫ সেমি উচ্চতা) তৈরি করুন, ছায়া জাল দিয়ে ঢাকুন, অঙ্কুরোদ্গম পর্যন্ত হালকা সেচ দিন। ব্যবধান: ৬০ - ৪৫ সেমি (সেচযুক্ত ফসলে), ৭৫ - ৬০ সেমি (বৃষ্টিনির্ভর অবস্থায়)।	విత్తన రేటు / విత్తే పద్ధతి / అంతరం విత్తన రేటు: 400 గ్రా(ఓపెన్ పరాగసంపర్క రకం) లేదా 100 గ్రా(హైబ్రిడ్). విత్తనం: నర్సరీ బెడ్స్ (1 మీ. వెడల్పు, 15 సెం.మీ. ఎత్తు) పెంచండి, నీడ వలతో కప్పండి, మొలకెత్తేవరకు తేలికపాటి నీటిని అందించండి. అంతరం: 60 - 45 సెం.మీ. (నీటిపారుదల పంటలలో), 75 - 60 సెం.మీ. (వర్షాధారిత పరిస్థితులలో).
Seed Treatment	Seed Treatment Treat seeds with Trichoderma viride @ 4 g/kg seed or Pseudomonas fluorescens @ 10 g/kg before sowing to prevent fungal diseases. For chemical treatment: Captan or Thiram @ 2 g/kg seed.	બીજ સંસ્કાર	બીજ સંસ્કાર ફંગલ રોગોથી બચાવ માટે વાવણી પહેલાં બીજને ટ્રાઇકોડર્મા વિરિડિ (4 ગ્રામ/કિલો બીજ) અથવા સ્યુડોમોનાસ ફ્લોરોસેન્સ (10 ગ્રામ/કિલો બીજ) સારવાર કરો. રાસાયણિક સારવાર માટે: કેપ્ટન અથવા થિરામ (2 ગ્રામ/કિલો બીજ).	बीज संस्कार बुरशीजन्य रोगांपासून संरक्षणासाठी पेरणीपूर्वी बियाणांवर ट्रायकोडर्मा विरिडी (४ ग्रॅम/किलो बियाणे) किंवा स्यूडोमोनास फ्लोरेसेन्स (१० ग्रॅम/किलो बियाणे) या जैविक बुरशीनाशकाची बीजप्रक्रिया करावी. रासायनिक बीजप्रक्रिया: कॅप्टन (Captan) किंवा थिरम (Thiram) @ २ ग्रॅम/किलो बियाणे.	بیج کا علاج فنگس بیماریوں سے بچاؤ کے لئے بوائی سے پہلے بیجوں کو ٹرائیکوڈرما وائرڈی (4 گرام/کلو بیج) یا سیوڈوموناس فلورسینس (10 گرام/کلو بیج) سے علاج کریں۔ کیمیائی علاج: کیپٹن یا تھیرام @ 2 گرام/کلو بیج۔	बीज उपचार फंगल रोगों से बचाव के लिए बुवाई से पहले बीजों को ट्राइकोडर्मा विरिडे (4 ग्राम/किलो बीज) या स्यूडोमोनास फ्लोरेसेन्स (10 ग्राम/किलो बीज) से उपचारित करें। रासायनिक उपचार: कैप्टन या थिरम @ 2 ग्राम/किलो बीज।	بیج کا علاج فنگل بیماریوں سے بچاؤ کے لئے بوائی سے پہلے بیجوں کو ٹرائیکوڈرما وائرڈی (4 گرام/کلو بیج) یا سیوڈوموناس فلورسینس (10 گرام/کلو بیج) سے علاج کریں۔ کیمیائی علاج: کیپٹن یا تھیرام @ 2 گرام/کلو بیج۔	बीज उपचार फंगल रोगों से बचाव के लिए बुवाई से पहले बीजों को ट्राइकोडर्मा विरिडे (4 ग्राम/किलो बीज) या स्यूडोमोनास फ्लोरेसेन्स (10 ग्राम/किलो बीज) से उपचारित करें। रासायनिक उपचार: कैप्टन या थिरम @ 2 ग्राम/किलो बीज।
Weed Management	Weed Control First hand weeding at 25-30 days after transplanting and second after 30-35 days. Mulching with plastic or organic residues helps control weeds and conserve soil moisture. Avoid deep hoeing near roots.	તાણ વ્યવસ્થાપન	નીંદણ નિયંત્રણ રોપણી પછી 25-30 દિવસે પ્રથમ ફાલણી અને 30-35 દિવસ પછી બીજી ફાલણી. પ્લાસ્ટિક કે સેન્દ્રિય કચરાથી તે નીંદણ અટકાવે છે અને જમીનમાં ભેજ જાળવવામાં મદદ કરે છે. મૂળ નજીક ઊંડા ખોદકામ ટાળો.	तण नियंत्रण लागवडीनंतर २५-३० दिवसांनी पहिलीच आणि ३०-३५ दिवसांनी दुसरी तण काढणी करावी. प्लास्टिक किंवा सेंद्रिय आच्छादनाचे अच्छादन करणारे तण नियंत्रणास मदत करते आणि जमिनीतील ओलावा टिकवून धरण्यास मदत होते. मुळांजवळ खोल कोळपणे टाळावे.	خرپتوار کنٹرول پہلی خرپتوار کنٹرول پودے لگانے کے 25-30 دن بعد اور دوسری 30-35 دن بعد کریں۔ پلاسٹک یا نامیاتی باقیات سے ملچنگ خرپتوار کو کنٹرول کرنے اور مٹی کی نمی برقرار رکھنے میں مدد کرتی ہے۔ جڑوں کے قریب گہری کھدائی سے بچیں۔	खरपतवार नियंत्रण पहली निराई रोपण के 25-30 दिन बाद और दूसरी 30-35 दिन बाद करें। प्लास्टिक या जैविक मलबे से मल्चिंग खरपतवार को नियंत्रित करने और मिट्टी की नमी बनाए रखने में मदद करती है। जड़ों के पास गहरी खुदाई से बचें।	নিড়ানি রোপণের ২৫-৩০ দিন পরে প্রথম নিড়ানি এবং ৩০-৩৫ দিন পরে দ্বিতীয় নিড়ানি দিন। প্লাস্টিক বা জৈব আবর্জনা দিয়ে মালচিং আগাছা নিয়ন্ত্রণে সাহায্য করে এবং মাটির আর্দ্রতা সংরক্ষণ করে। গাছের কাছে গভীর খনন এড়িয়ে চলুন।	కలుపు నియంత్రణ నాట్లు వేసిన 25-30 రోజుల తర్వాత మొదటి కలుపు తీయండి, రెండవ కలుపు 30-35 రోజుల తర్వాత తీయండి. ప్లాస్టిక్ లేదా సేంద్రీయ వ్యర్థాలతో మల్చింగ్ కలుపు మొక్కలను నియంత్రించడానికి మరియు నేల తేమను కాపాడడానికి సహాయపడుతుంది. మొక్కల దగ్గర లోతైన తవ్వకాలను నివారించండి.
Fertilizer Management	Fertilizer & Nutrient Management Follow soil test results. General guideline per hectare: • FYM: 20-25 t/ha; • NPK: 160:100:100 kg/ha (N:P:O:K:O) Application schedule: - Full P & K and half N as basal dose before transplanting. - Remaining N in two equal splits — at 30 and 60 days after transplanting. Use Azospirillum and Phosphobacteria @ 2 kg/ha along with organic manure. (Source: Kerala Agriculture & Vikaspedia)	ખાતર વ્યવસ્થાપન અને માવજત	ખાતર અને પોષક તત્વોનું સંચાલન માટી પરીક્ષણના આધારે અનુસરો. સૂચિત ઉત્પાદન સામાન્ય માર્ગદર્શિકા: • ગોબર ખાતર: 20-25 ટન (હેક્ટરદીઠ) • NPK: 160:100:100 કિગ્રા/હેક્ટર (N:P:O:K:O) અરજીનું સમયપત્રક: - સંપૂર્ણ પોટાશ: 20-25 દિવસ (હેક્ટરદીઠ) - નત્રજન: 160:100:100 કિગ્રા/હેક્ટર (N:P:O:K:O) અરજીનું સમયપત્રક: - સંપૂર્ણ પોટાશ અને અડધો નત્રજન રોપણી પહેલાં આધાર તરીકે આપવામાં આવે છે. - બાકીનું નત્રજન: 20-25 દિવસ (હેક્ટરદીઠ) - નત્રજન: 160:100:100 કિગ્રા/હેક્ટર (N:P:O:K:O) અરજીનું સમયપત્રક: - રોપણી પહેલાં સંપૂર્ણ ફોસ્ફરસ અને પોટેશિયમ અને અડધો નત્રજન આધાર તરીકે આપવામાં આવે છે. - બાકીનું નત્રજન બે સમાન ભાગોમાં આપવું — રોપણી પછી 30 અને 60 દિવસે. - ફોસ્ફોબેક્ટેરિયા અને એઝોસ્પિરિલમ સેન્દ્રિય ખાતર સાથે 2 કિગ્રા/હેક્ટરની દરે વાપરો. સ્રોત: કેરળ કૃષિ અને વિકાસવિભાગ	खत आणि पोषक तत्वांचे व्यवस्थापन माती परीक्षणानुसार खत द्यावे. सामान्य शिफारस मार्गदर्शक सूचना: • शेणखत: २०-२५ टन (प्रति एकर) • नत्रयुक्त: १६०:१०० १०० किलोग्रॅम/एकर (N:P:O:K:O) खत देण्याचे वेळापत्रक: - शेणखत आणि पूर्ण स्फुरद आणि पालाश लागवडीपूर्वी पाया म्हणून द्यावे. - उरलेले नत्र: २०-२५ दिवस (एकरदीड) - नत्रयुक्त: १६०:१०० १०० किलोग्रॅम/एकर (N:P:O:K:O) अरजीनुसार वेळापत्रक: - संपूर्ण फॉस्फरस आणि पोटॅशियम आणि अर्धा नत्र लागवडीपूर्वी पाया म्हणून द्यावे. - उरलेले नत्र दोन समान हप्त्यांमध्ये द्यावे — लागवडीनंतर ३० आणि ६० दिवसांनी. - अझोस्पिरिलम आणि फॉस्फोबॅक्टेरिया २ किलोग्रॅम/हेक्टर सेंद्रिय खतासोबत वापरा. (स्रोत: केरळ कृषि आणि विकास विभाग)	کھاد اور غذائیت کا انتظام مٹی کی جانچ کے نتائج پر عمل کریں۔ عام رہنما خطوط فی ہیکٹر: • گوبر کی کھاد: 20-25 ٹن/ہیکٹر؛ • NPK: 160:100:100 کلو/ہیکٹر (N:P:O:K:O) درخواست کا شیڈول: - مکمل P & K اور آدھا N بطور بنیادی خوراک پودے لگانے سے پہلے۔ - باقی N دو برابر حصوں میں — پودے لگانے کے 30 اور 60 دن بعد۔ ازوسپیرلم اور فاسفوبیکٹیریا @ 2 کلو/ہیکٹر نامیاتی کھاد کے ساتھ استعمال کریں۔ (ماخذ: کیرالا زراعت اور ترقیات)	खत और पोषक तत्व प्रबंधन मिट्टी परीक्षण के परिणामों का पालन करें। सामान्य दिशानिर्देश प्रति हेक्टेयर: • गोबर खाद: 20-25 टन/हेक्टेयर; • NPK: 160:100:100 किग्रा/हेक्टेयर (N:P:O:K:O) आवेदन कार्यक्रम: - पूरा P और K और आधा N रोपाई से पहले आधार के रूप में। - शेष N दो समान भागों में — रोपाई के 30 और 60 दिन बाद। अज़ोस्पिरिलम और फॉस्फोबैक्टीरिया 2 किग्रा/हेक्टेयर जैविक खाद के साथ। (स्रोत: केरल कृषि और विकास विभाग)	کھاد اور غذائیت کا انتظام مٹی کی جانچ کے نتائج پر عمل کریں۔ عام رہنما خطوط فی ہیکٹر: • گوبر کی کھاد: 20-25 ٹن/ہیکٹر؛ • NPK: 160:100:100 کلو/ہیکٹر (N:P:O:K:O) درخواست کا شیڈول: - مکمل P اور K اور آدھا N بطور بنیادی خوراک پودے لگانے سے پہلے۔ - باقی N دو برابر حصوں میں — پودے لگانے کے 30 اور 60 دن بعد۔ ازوسپیرلم اور فاسفوبیکٹیریا @ 2 کلو/ہیکٹر نامیاتی کھاد کے ساتھ استعمال کریں۔ (ماخذ: کیرالا زراعت اور ترقیات)	खाद और पोषक तत्व प्रबंधन मिट्टी परीक्षण परिणामों का पालन करें। सामान्य दिशानिर्देश प्रति हेक्टेयर: • गोबर खाद: 20-25 टन/हेक्टेयर; • NPK: 160:100:100 किग्रा/हेक्टेयर (N:P:O:K:O) आवेदन कार्यक्रम: - पूरा P और K और आधा N रोपाई से पहले आधार के रूप में। - शेष N दो समान भागों में — रोपाई के 30 और 60 दिन बाद। अज़ोस्पिरिलम और फॉस्फोबैक्टीरिया 2 किग्रा/हेक्टेयर जैविक खाद के साथ। (स्रोत: केरल कृषि और विकास विभाग)
Irrigation Management	Irrigation Management Maintain uniform soil moisture; avoid water stress and waterlogging. • Immediately after transplanting light irrigation. • Vegetative to flowering stage: irrigation every 6-8 days in absence of rain; reduce to 10-12 days. • Avoid excess irrigation during flowering and fruit maturity to prevent fruit rot. Drip irrigation improves yield and water efficiency. (Source: KSSSR Karnataka & Kerala Agriculture)	સિંચાઈ વ્યવસ્થાપન	સિંચાઈ વ્યવસ્થાપન જમીનમાં સમાન ભેજ જાળવો અને વધારાનું પાણી અને પાણી ભરાવાનું ટાળો. • રોપણી પછી તરત જ હળવી સિંચાઈ. • વનસ્પતિથી ફૂલોના તબક્કા સુધી: જ્યારે વરસાદ ન હોય ત્યારે દર 6-8 દિવસે અને અંતરે જમીનમાં 2-3 સેમી ઊંડે અંતરે જમીનમાં ભેજ તપાસો. • ફૂલોનો ઘટ્ટ અને પાકવાના સમયે પાણી અને ખાતર પ્રતિબંધિત કરો. ટપક સિંચાઈ ઉપજ અને પાણીની કાર્યક્ષમતામાં સુધારો કરે છે. (સ્રોત: કેએસએસઆર કર્ણાટક અને કેરળ કૃષિ)	सिंचन व्यवस्थापन अतिसिंचन आणि ताणताण टाळा; चांगल्या ताण आणि पाणचट्याच्या टप्प्यात. • लागवडीनंतर लगेच हलके सिंचन. • वनस्पतीच्या अवस्थेपासून फुलांपर्यंतच्या टप्प्यात: पावसाच्या अनुपस्थितीत दर ६-८ दिवसांनी आणि जमिनीत २-३ सेंटीमीटर खोलवर ओलावा तपासा. • फुलांच्या आणि फळांच्या पक्वतेच्या टप्प्यात पाणी आणि खतांचा पुरवठा मर्यादित करा. ठिबक सिंचनामुळे उत्पादन आणि पाण्याची कार्यक्षमता सुधारते. (स्रोत: कर्नाटक कृषी आणि कृषी विज्ञान केंद्र)	آبپاشی کا انتظام مناسب نمی برقرار رکھیں؛ پانی کی کمی اور پانی کے جمع ہونے سے بچیں۔ • پودے لگانے کے فوراً بعد ہلکی آبپاشی۔ • نباتاتی مرحلے سے پھول آنے تک: بارش کی غیر موجودگی میں ہر 6-8 دن بعد آبپاشی کریں؛ 10-12 دن تک کم کریں۔ • پھول آنے اور پختگی کے دوران زیادہ آبپاشی سے بچیں تاکہ پھل کی سڑن سے بچا جا سکے۔ ڈرپ آبپاشی پیداوار اور پانی کی کارکردگی بہتر بناتی ہے۔ (ماخذ: کے ایس ایس آر کرناٹک اور کیرالا زراعت)	सिंचाई प्रबंधन समान मिट्टी नमी बनाए रखें; जल तनाव और जलभराव से बचें। • रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई। • वनस्पतिवत अवस्था से फूल आने तक: वर्षा न होने पर हर ६-८ दिन में सिंचाई करें; १०-१२ दिन तक कम करें। • फूल आने और फल पकने के दौरान अधिक सिंचाई से बचें ताकि फल सड़न न हो। ड्रिप सिंचाई उपज और जल दक्षता में सुधार करती है। (स्रोत: कर्नाटक कृषि विज्ञान केंद्र)	آبپاشی کا انتظام مناسب نمی برقرار رکھیں؛ پانی کی کمی اور پانی کے جمع ہونے سے بچیں۔ • پودے لگانے کے فوراً بعد ہلکی آبپاشی۔ • نباتاتی مرحلے سے پھول آنے تک: بارش کی غیر موجودگی میں ہر 6-8 دن بعد آبپاشی کریں؛ 10-12 دن تک کم کریں۔ • پھول آنے اور پختگی کے دوران زیادہ آبپاشی سے بچیں تاکہ پھل کی سڑن سے بچا جا سکے۔ ڈرپ آبپاشی پیداوار اور پانی کی کارکردگی بہتر بناتی ہے۔ (ماخذ: کے ایس ایس آر کرناٹک اور کیرالا زراعت)	सिंचाई प्रबंधन समान मिट्टी नमी बनाए रखें; जल तनाव और जलभराव से बचें। • रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई। • वनस्पतिवत अवस्था से फूल आने तक: वर्षा न होने पर हर ६-८ दिन में सिंचाई करें; १०-१२ दिन तक कम करें। • फूल आने और फल पकने के दौरान अधिक सिंचाई से बचें ताकि फल सड़न न हो। ड्रिप सिंचाई उपज और जल दक्षता में सुधार करती है। (स्रोत: कर्नाटक कृषि विज्ञान केंद्र)
Disease Management	Disease Management 1. Damping-off (nursery): Soil drenching with Copper oxychloride 0.25% or Mancozeb 0.25%. 2. Leaf Curl Complex: Spray Dimethoate 1 ml/L or Sulphur dust @ 20 kg/ha. 3. Fruit rot (Phytophthora): Spray Copper oxychloride 0.3% + Streptocycline 0.01% at 10 day intervals. 4. Leaf spot / Mosaic virus: Use resistant varieties; control aphids (vectors) with Imidacloprid 0.3 ml/L, remove infected plants. (Source: Agri Khet & Kerala Agriculture)	રોગ વ્યવસ્થાપન	રોગ વ્યવસ્થાપન 1. ફૂગજન્ય રોગો (ફોઈટોરા અને સ્ક્લેરોટિયમ): ટોપ્સિન-એમ 0.2% અથવા કોપર ઓક્સિક્લોરાઇડ 0.25% નો ડ્રેન્ચ કરો. 2. પાંદડાં વળવાં: ડાયમેથોએટ 1 મિલી/લિટર અથવા સલ્ફર ડસ્ટ 20 કિગ્રા/હેક્ટર છાંટો. 3. ફળ સડો (ફાઈટોફ્થોરા): કોપર ઓક્સિક્લોરાઇડ + ટ્રાઈકોડર્મા વિરિડિ 10 દિવસ અંતરે છાંટો. 4. ટોપ વાયરસ / મોઝેઈક: પ્રતિરોધક જાતો વાવો; મોલો (વાહક) સામે ઇમિડાક્લોપ્રિડ 0.3 મિલી/લિટર છાંટો, અસરગ્રસ્ત છોડ કાઢી નાખો. (સ્રોત: કૃષિ ખેત અને કેરળ કૃષિ)	रोग व्यवस्थापन १. बुरशीजन्य रोग (फायटोफ्थोरा, स्क्लेरोटियम): टोपसिन-एम ०.२५% किंवा कॉपर ऑक्सिक्लोराइड ०.२५% ड्रेंच करा. २. पानांचे आकसणे: डायमेथोएट १ मि.ली./लिटर किंवा सल्फर डस्ट २० किग्रा/हेक्टर फवारा. ३. फळ कुजणे (फायटोफ्थोरा): कॉपर ऑक्सिक्लोराइड + ट्रायकोडर्मा विरिडी १० दिवसांनी फवारा. ४. मोझेक / पानांचे ठिपके: प्रतिकारक्षम वाण लावा; मावा (वाहक) नियंत्रण करा, बाधित रोपे काढा. (स्रोत: कृषी खेत आणि केरळ कृषी)	بیماری کا انتظام 1. بیج کا بوسیدہ ہونا (نرسری): کاپر آکسی کلورائڈ 0.25% یا مینکوزیب 0.25% سے ڈرینچ کریں۔ 2. پتوں کا مڑنا: ڈائمیتھوئیٹ 1 ملی لیٹر فی لیٹر کا چھڑکاؤ کریں یا سلفر ڈسٹ 20 کلو/ہیکٹر کا چھڑکاؤ کریں۔ 3. پھل کا سڑنا (فائٹوفتھورا): کاپر آکسی کلورائڈ + ٹرائیکوڈرما وائرڈی 10 دن کے وقفے سے چھڑکاؤ کریں۔ 4. موزیک / پتوں کے دھبے: مزاحمتی اقسام لگائیں؛ ایمیڈاکلوپرڈ 0.3 ملی لیٹر فی لیٹر سے چھڑکاؤ کریں، متاثرہ پودے نکال دیں۔ (ماخذ: کرناٹک زرعی اور کیرالا زراعت)	रोग प्रबंधन १. बीजांकुर का सड़ना (नर्सरी): कॉपर ऑक्सीक्लोराइड ०.२५% किंवा मैनकोज